अजायब बानी

मासिक पत्रिका अप्रेल–2021

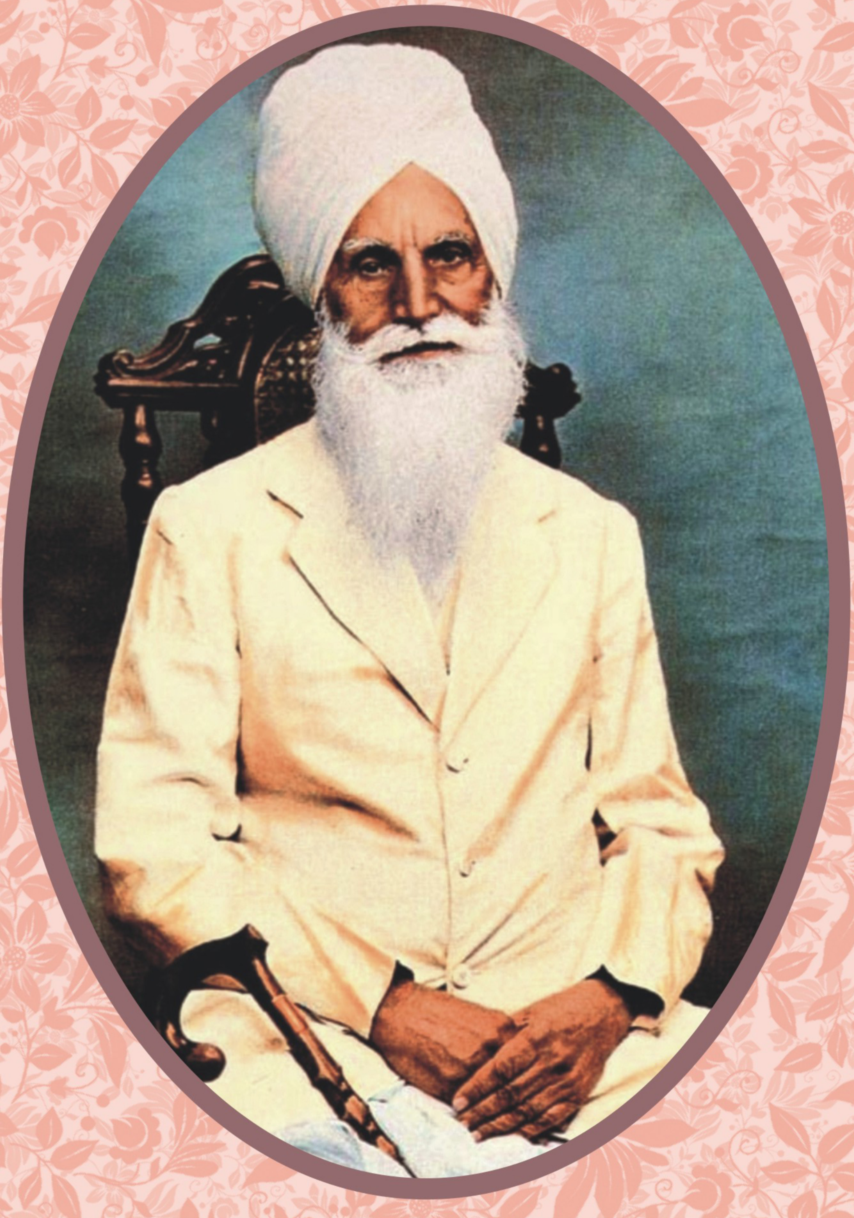

बाबा सावन सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–बारहवां | अप्रेल–2021

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आप मुझे पराया न समझें, मैं आपका हूँ 3

गुरु नानकदेव जी की बानी 16 पी. एस.आश्रम (राजस्थान)

बाबा सावन सिंह जी महाराज 23

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

हम किसकी भक्ति कर रहे हैं? 30

16 पी. एस.आश्रम (राजस्थान)

प्रकाशक : सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : नन्दनी सहयोग : ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 229 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

बाबा सावन सिंह जी महाराज

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

2 अप्रैल 1995

आप मुझे पराया न समझें, मैं आपका हूँ

गुरु नानकदेव जी की बानी   16 पी. एस.आश्रम (राजस्थान)

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में करोड़ों बार नमस्कार है जिन्होंने हमारे ऊपर रहम किया, हमें भक्ति का दान दिया, अपनी भक्ति में दाखिल किया और अपने घर का निमंत्रण दिया। कबीर साहब कहते हैं:

जो प्रभ किए भगत ते बाहंज तिन ते सदा डराने रहिए।

जिन्हें परमात्मा ने अपनी भक्ति के चुनाव में नहीं लिया उनसे दूर रहने में ही फायदा है। वे भाग्यशाली जीव हैं जिन्हें परमात्मा ने अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका दिया।

सन्त जब भी इस संसार में आते हैं कोई नया संदेश लेकर नहीं आते, वे पिछले आए हुए सन्तों के संदेश को ताजा करके चले जाते हैं। हम उनके संदेश को भूल जाते हैं वे फिर हमें समझाने के लिए आ जाते हैं। हम आज जिस महान गुरु परमात्मा रूप बाबा सावन सिंह जी महाराज की याद में बैठे हैं, आज 2 अप्रैल आपका भंडारा है; आप बहुत दयालु थे।

पंजाब में दस गुरु साहिबान देह धारण करके आए। गुरु नानकदेव जी ने चीन, लंका, बगदाद, मक्का और साऊदी अरब तक की बहुत लम्बी–लम्बी यात्राएं की। उस समय यात्राएं करनी बहुत मुश्किल थी क्योंकि उस समय आज की तरह हवाई जहाज, कार या जीप के साधन नहीं थे यात्राएं पैदल ही करनी पड़ती थी। उन्होंने हमारे ऊपर बहुत रहम किया। जब हम गुरु नानकदेव जी, दसों गुरुओं के उपदेश को भूलकर बाहरमुखी हो गए कर्मकांड में ही मुक्ति समझने लगे उस समय पंजाब में महाराज सावन सिंह जी का आगमन हुआ। गुरु नानकदेव जी ने गुरु ग्रंथसाहब में जगह–जगह लिखा है कि नाम बिना मुक्ति नहीं, गुरु बिना नाम नहीं मिलता।

हमारे धर्मग्रंथ हमें जो बताते हैं उन पर अमल करना ही उन महात्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करना है। जब हम उनका दिया हुआ उपदेश भूल गए बाहरमुखी हो गए तो महाराज सावन सिंह जी परमात्मा के हुक्म में पंजाब में आए। आप बहुत ही दयालु और प्यार भरे थे, जिन आत्माओं को आपके चरणों में बैठने का मौका मिला वे आपको भुला नहीं सके।

यह एक सच्चाई है कि आप जब हँसते तो आपके खास प्रेमियों को आपके मुख में से फूल गिरते हुए नजर आते थे, आपका सारा जिस्म ही हँसता था। आपके बात करने का तरीका ही अलग था, आप बात किसी से करते और कंपकपी किसी और को होती थी। आप कहा करते थे, ''**आप मुझे पराया न समझें, मैं आपका हूँ।**'' आपने गुरु नानकदेव जी के उपदेश को ताजा किया। आप कहते हम आपको कोई नई चीज बताने के लिए नहीं आए यह चीज युगों-युगों से चली आ रही है।

दुनिया ने परमात्मा को ढूढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऋषियों-मुनियों ने साठ-साठ हजार वर्ष तप किया आखिर वे मन के आगे बेबस हो गए। वे बहुत बहादुर थे जिन्होंने इतने तप और साधना की लेकिन पूरा गुरु न मिलने की वजह से उनका मजाक उड़ा। पूरा गुरु संसार में आकर हमें वह साधन बताता है जिससे हम मन के ऊपर काबू पा लेते हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा है:

मन जीते जग जीत।

न कोई कौम हमारी दुश्मन है न कोई मजहब हमारा दुश्मन है और न ही कोई पड़ोसी हमारा दुश्मन है दुश्मन तो हमारा मन है जो हमारे अंदर बैठा है अगर हम मन की रूकावट दूर कर लेते हैं तो सारी कायनात ही हमें सज्जन नजर आती है। सन्त जब भी आते हैं तो उनकी नजर आत्मा पर होती है बुराई तो मन में है, आत्मा परमात्मा की अंश है।

आपके पास 7 पी.एस. वाले शर्मा जी की माता बैठी है। यह वह परिवार है जिन्होंने महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठकर बहुत प्यार प्राप्त किया। मैं जब इस माता से मिला तो यह बहुत गद्‌गद्‌ होकर कहने लगी कि महाराज सावन ने मुझे कुर्सी के पास बिठाकर नाम दिया था।

जब मैं अमेरिका गया, मैं पूर्वी तट पर था वहाँ से पश्चिमी तट का तीन–चार हजार मील का फासला है। पश्चिमी तट पर डोना कैली अपना जीवन कुर्सी पर बैठकर बिता रही थी, उससे चला नहीं जाता था। मुझे बताया गया कि वह आपको याद करती है। वह महाराज सावन सिंह जी की नामलेवा है और महाराज कृपाल की सेवा किया करती थी। प्रेमियों ने मेरे लिए विशेष हवाई जहाज का बंदोबस्त किया। हम लोग तीन हजार किलोमीटर उड़कर उसके पास गए। डोना कैली वाक्य ही प्यार की मूर्त थी। जब वहाँ गए तो वहाँ सतसंग शुरु किया।

इसी तरह क्ली डिलविया स्टेट है वहाँ डेविड डायमंड चार–पाँच साल से चारपाई पर ही बैठा था। वह हमेशा ही याद करता था कि मेरी श्रद्धा है कि शायद आप मुझसे मिल सकेंगे। इसी तरह प्रेमियों ने मेरा वहाँ जाने का इंतजाम किया तो मैं उनसे भी मिल सका, वे प्रेमी भी बहुत अच्छे थे। जब मैं वापिसी में जहाज पर चढ़ने लगा तो वह अपने घर से एक कंघा ले आया। उसने मुझसे कहा कि आप यह कंघा अपनी दाढ़ी में फेरें अगर कंघे में कोई बाल निकल आया तो मैं उस बाल को निशानी के तौर पर रख लूँगा। मैंने हँसकर कहा, ''देखो! कितनी संगत है अगर ये सारे एक–एक बाल लेंगे तो मेरे पल्ले कुछ नहीं रहेगा।''

प्यारेयो, गुरु के सिक्ख की कद्र वही करेगा जो गुरु का सिक्ख है। इसी तरह जब गुरु नानकदेव जी, गुरु अंगददेव जी की आँखों से ओझल हो गए तो गुरु अंगददेव जी चाहते थे कि मुझे कोई गुरु नानकदेव जी की सिफत करने वाला मिले। गुरु की सिफत करने वाला मिलेगा तो दिल को

ठंडक पहुँचेगी, शान्ति आएगी। गुरु अंगददेव जी के गाँव से काफी दूर गुरु नानकदेव जी की नामलेवा एक माता थी। आप उस माता के पास पैदल चलकर जाते उसके पास बैठकर अपने गुरु की बातें करते कि किस तरह हम गुरु के चरणों में बैठकर दर्शनों का आन्नद लेते थे।

इसी तरह मैं जब भी ब्लूचिस्तानी मस्ताना के पास जाता तो आप मुझे देखते ही दूर से कहते, ''हाँ भाई! आपने जैसा सावन देखा है वैसा बताओ।'' मैं अपने ढ़ंग से जैसा देखा था वैसा ही बताता था। प्यारेयो, गुरु की कद्र उसके सिक्ख में होती है। यह हमारे महान सतगुरु की दया थी जो वह हँसते-हँसते भी अपना बना लेते थे। आपने पत्थर पूजकों में गुरुबानी का ऐसा जज्बा बिठाया तो उन लोगों ने कहा ओह! गुरु नानकदेव जी ने सिक्खों को इतना बड़ा खजाना दिया है पर सिक्खों को पता नहीं कि गुरु नानकदेव जी क्या लिख गए हैं? आप कहते हैं:

पढ़ पढ़ थक्के शान्त न आए बिन सतगुरु कोई नाम न पाए प्रभ ऐसी बणत बनाई है।

आप पढ़-पढ़ कर थक भी क्यों न जाएं, चूर भी क्यों न हो जाएं लेकिन गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। गुरु ग्रंथ साहब में ज्यादा जोर दिया गया है कि नाम के बिना मुक्ति नहीं, गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती। महात्माओं ने दिन-रात सतसंग पर जोर दिया है। पल्टू साहब भी कहते है:

भाज रे भाज फकीर के बालके, कनक और कामिनी बाग लागा।
मार तो लएंगे पया चिंचलाएगा, बड़ा बेवकूफ तू ना ए भागा।
श्रृंगी ऋषि जैसे तो मार लिए, बचा न कोई जो लाख त्यागा।
दास पल्टू बचेगा सोई, जो बैठ सतसंग दिन रात जागा।।

महाराज कृपाल ने मुझसे यही कहा था, ''बेटा! जब तक तू चारपाई पर हिल-डुल सकता है तब तक सतसंग न छोड़ना। हम जब तक खेती को पानी नहीं देंगे तो वह किस तरह हरी होगी। बाबा सावन सिंह जी कैसे थे और वे हमें प्यार की क्या निशानी देकर गए हैं। गौर से सुनें:

सावन सावन दुनियां कैहंदी, मैं औहदी मस्तानी,
हसदा–हसदा दे गया मैनूं, कृपाल अमर निशानी x 2
सावन सावन दुनियां कैहंदी.....

जद दा सावन नजरी आया, पलकां विच लुकाया,
अजे तक ना भुल्ल ही सकया, ज्यों सावन मुस्काया x 2
सावन प्यारा, सावन सोहणा, सावन दिलबर जानी,
हसदा–हसदा.....

ओह सी इक नूरानी चेहरा, अक्खां विच समाया,
चोज निराले शान निराली, अजे समझ ना आया x 2
नित ही रोवां नित ही गांवा, लोग कहण दिवानी,
हसदा–हसदा.....

चिट्टी दाढ़ी चौड़ा मत्था, पगड़ी बन्न सज आया,
परियां तक ओहनूं सजदे करदियां, चन्न वी अम्बर चढ़ आया x 2
दुनियां ओहनूं बाहर लब्भदी, दे गया किते झकानी,
हसदा–हसदा.....

चलो नी सईयो सिरसे नूं चलिए, कृपाल ने होका लाया,
सावन दयालु ने रिमझिम लाई, 'अजायब' ने भी गाया x 2
आओ सब ही दर्शन करिऐ, ओह सूरत नूरानी,
हसदा–हसदा.....

जब आप यह कहते कि मैं आपका हूँ, मैंने आपको छोड़कर नहीं जाना मैं आपको लेने के लिए आया हूँ तो टूटे हुए हजारो–लाखों दिलों को सहारा मिल जाता था। महाराज कृपाल सदा यही कहते रहे, ''देने वाले का कोई कसूर नहीं सवाल तो लेने वाले का है।'' महाराज सावन सिंह

जी ने पैन्तालिस साल खुले हाथों से दात लुटाई, जिसका जैसा बर्तन था उसने वैसी–वैसी दौलत प्राप्त की। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सतगुरु दाता सबना बथु का, पूरे भाग ओह पावणया।

परमात्मा ने सन्तों को भंडारी बनाया होता है लेकिन हम अपने भाग्य के मुताबिक ही उनसे प्राप्त कर सकते हैं अगर हमारे भाग्य में नहीं होगा तो हम दरिया में बैठे हुए भी प्यासे रह जाते हैं। मछली सारा दिन पानी में रहती है लेकिन वह जब तक उलटी नहीं होती तब तक उसके मुँह में पानी का कतरा नहीं जाता। इसी तरह जब तक हम दुनिया की तरफ से उलटते नहीं तो हमने जो चीज सन्तों से माँगनी है वह माँग ही नहीं सकते।

महाराज कृपाल बहुत प्यार से कहा करते थे कि मैं अपने गुरु को फिजूल खर्ची करने वाला मिला हूँ, आओ! आप ले जाओ। आप फिर कहते, ''देने वाले का क्या कसूर है मसला तो लेने वाले का है?''

मैं बताया करता हूँ कि मुझे अपनी जिंदगी में कई महात्माओं के चरणों में जाने का मौका मिला है। मैं सिक्खों के घर में पैदा हुआ था, गुरु ग्रंथ साहब बचपन में ही पढ़ाया गया। मैंने गुरु ग्रंथ साहब दिल लगाकर पढ़ा बहुत खोज की और सिक्खों के गुरुद्वारों में भी गया। जब मैंने उदासी सम्प्रदाय में कुछ समय बिताया तो मुझे हिन्दुओं के मंदिरो में जाने का मौका मिला। उदासी मत में ही मैंने धूनियाँ तपाई, जलधारे किए। यह बहुत प्यार का खेल था, मेरे दिल में अच्छे से अच्छा जज्बात था।

मैं जिस भी सन्त के पास गया मैंने श्रृद्धा, प्यार और नम्रता से उसकी सेवा की अगर वह महात्मा शराब पीता तो उसने वह प्याला भेंट कर दिया। जो महात्मा देह पलटता था उसने वह भेंट कर दिया कि मेरे पास इतनी ही वस्तु है लेकिन मैंने किसी की निन्दा नहीं की। मैं निन्दा करने में विश्वास नहीं करता किसी की तरह बनना बहुत मुश्किल है निन्दा कर लेनी आसान है। हमने महाराज सावन सिंह जी से सुना था कि बेटा! आप

जिसकी निन्दा करते हो उसके सारे पाप आपके खाते में जमा हो जाएंगे और आपके शुभ कर्म उसको मिलेंगे। गुरु नानकदेव जी का वाक है:

निन्दया भली काहूँ की नाहिं मनमुख मुग्ध करन,
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पापी की निन्दा करना भी बुरा है अगर हम नाम वाले की निन्दा करेंगे तो कौन से नर्क में जाएंगे? मैं जिस भी महात्मा के पास गया मेरे दिल में आज भी उसके लिए इज्जत है। मेरे पास जितने भी प्रेमी आते हैं मैं सबको महाराज सावन सिंह जी का वाक्य याद करवाया करता हूँ कि निन्दा न मीठी है न खट्टी है न चटपटी है और न ही इसमें कोई स्वाद है लेकिन हम फिर भी दिन-रात इसके साथ चिपटे हुए हैं।

मुझे संसार में विचरने का बहुत मौका मिला है। मैंने बड़े प्यार से धूनिया भी तपाई लेकिन धूनिया तपाने से न मुझे शान्ति मिली न सुरत ही अंदर गई। जब मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला तो आपने कहा, ''देख भई बेटा! अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पाँच किस्म की अग्नि जल रही है। काम की अग्नि सोए हुए इंसान का शरीर तपा देती है वह जब तक उस अग्नि को ठंडा नहीं कर लेता तब तक उसे चैन नहीं आता। क्रोध की अग्नि भाई-भाई का सिर गाजर मूली बना देती है। लोभ की अग्नि पहले ही अंदर जल रही है अगर तूने बाहर की अग्नि में अपना जिस्म जला लिया तो क्या फायदा है?''

ये सब कर्म करके मैं फिरता-फिरता प्रशादवाली पहुँचा। प्रशादवाली मुक्तसर साहब और थाम्बेवाली के बीच में वह जगह है जहाँ बाबा घोटा दास रहते थे। बाबा घोटा दास देह पलट लेते थे, मैं उनके पास तीन-चार महीने रहा। वह मुझ पर खुश हुए तो उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुझे साँप बनना सिखा सकता हूँ, शेर बनना सिखा सकता हूँ अगर कोई और

जानवर बनना हो तो वह भी सिखा सकता हूँ, मेरे पास यह साधन है और उन्होंने बनकर भी दिखाया। मैं उनके चरणों में श्रृद्धा से माथा टेककर चल पड़ा कि बाबा जी! मैं तो आपके पास इंसान के जामें से ऊपर उठकर प्रभु से मिलकर शान्ति प्राप्त करना चाहता था। ये योनियाँ तो बुरे कर्म करने से मुझे अपने आप ही मिल जाएंगी।

जो महान आत्माएं संसार में आती हैं उनमें पहले से ही थोड़ी बहुत अंतर्यामता होती है। ऐसी आत्माएं सदा ही परमात्मा के आगे अरदास करती हैं कि हे परमात्मा! हमारे ऊपर कृपा करना। महाराज कृपाल अरदास किया करते थे हे परमात्मा! मुझे पूरा गुरु मिले, मेरा किसी अधूरे गुरु से वास्ता न पड़ जाए। आप अक्सर कहा करते थे, ''भूखे को रोटी और प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है। कोई इंसान बने परमात्मा उसकी तलाश में है।''

महाराज सावन सिंह जी बाहर मिलने से सात साल पहले महाराज कृपाल के अंदर आने लगे। बाबा जयमल सिंह जी ने पाँच सौ किलोमीटर लम्बा सफर तय करके बाबा सावन सिंह जी को ढूंढ़ा। क्या बाबा जयमल सिंह जी को रास्ते में कोई नहीं मिला। इसी तरह मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि मैंने अठारह साल जमीन के अंदर बैठकर 'दो-शब्द' का अभ्यास किया। मैंने कभी महाराज कृपाल की बड़ाई करने वाला या निन्दा करने वाला नहीं सुना था। यह अब वही जानें कि किसने उन्हें मेरा नाम बताया किसने बताया कि मैं आपकी याद में बैठा हूँ। उन्होंने खुद ही अपने प्रेमी भेजे जिन्होंने संदेश दिया कि आप आ रहे हैं। प्यारेयो! कोई उसके लिए अपना हृदय बनाए। तुलसी साहब कहते हैं:

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए,
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए।

परमात्मा को बिठाने के लिए जगह बना लें वह बिना बुलाए ही आ जाएगा। हम जहाँ परमात्मा को बिठाना चाहते हैं वह जगह तो हमने निन्दा–चुगली, शराब–मीट डाल डालकर कर गंदी की हुई है, वहाँ परमात्मा कैसे बैठे? गंदी जगह पर किसी बड़े आदमी राजा या राष्ट्रपति को बुलाना कितना नामुमकिन होता है अगर हमारे घर किसी रिश्तेदार या बहन–भाई ने आना हो तो हम घर को साफ करते हैं कि वह हमारी या हमारे घर की निन्दा न कर जाए। सच्चखंड में रहने वाला परमात्मा हम शराबी कबाबियों में आकर किस तरह बैठेगा? शेरनी का दूध रखने के लिए सोने का बर्तन चाहिए। प्यारेयो, हम परमात्मा से मिलना चाहते हैं उसे अपने अंदर प्रकट करना चाहते हैं तो हमें वह जगह भी बनानी पड़ेगी।

आपके आगे गुरु नानकदेव जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, यह ऐतिहासिक शब्द है बहुत ध्यान से सुनने वाला है। गुरु नानकदेव जी के उदासी समय में शेख फरीद की गद्दी पर शेख बरम था। शेख बरम ने आपसे कई सवाल किए, ''महाराज जी! आप जिस गुरु की महिमा बयान करते हैं हम उसे किस तरह पहचान सकते हैं उसमें क्या विशेषता है?''

गुरु नानकदेव जी शेख बरम को प्यार से बताते हैं, ''देखो भई! परमात्मा ने न कोई जाति बनाई है न किसी पर कोई लेबल लगाकर भेजा है कि तू हिन्दू, सिक्ख या ईसाई है। हम संसार में आकर ही हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या इसाईयों के लेबल लगाते हैं ये हमारे अपने बनाए हुए हैं और इनका डिजाइनर हमारा मन है। सूरज आसमान में है सूरज से ही किरणें धरती पर आती हैं। सूरज की कोई जाति नहीं वह सबको एक समान प्रकाश देता है।''

इसी तरह परमात्मा एक सूरज है और आत्मा उसकी किरण है। एक किरण का जो संबंध सूरज के साथ है वही संबंध एक आत्मा का परमात्मा के साथ है। जिस परमात्मा ने इतना बड़ा संसार बनाया है वह अपने बच्चों

को पैदा करके भूलता नहीं। परमात्मा सदा ही अपने बच्चों को संसार में भेजता है। ऐसा नहीं कि सन्त हिन्दुओं में ही आए हैं उनके समझाने का भी अपना–अपना ढ़ंग होता है लेकिन सभी सन्तों की एक ही थ्योरी होती है। तीरंदाज कितने भी क्यों न हों सबका एक ही निशान होता है। सब सन्त यही कहते हैं कि परमात्मा एक है। चाहे कोई अमेरिका, हिन्दुस्तान या यूरोप का रहने वाला हो परमात्मा से मिलने का साधन और तरीका भी एक ही है। परमात्मा सबके अंदर है, जिसे भी परमात्मा मिला अंदर से ही मिला है और जिसे भी मिलेगा अंदर से ही मिलेगा। गुरु साहब कहते हैं:

इस गुफा में अखुट भंडारा तिस वसे प्रभ अलख अपारा।

किसी सन्त ने इसे गुफा कह दिया। वह अलख परमात्मा जिसे हम इन चमड़े की आँखों से नहीं देख सकते, वह परमात्मा भी इसमें है। सन्त हमें इस घर में उस घर को दिखा देते हैं कि तेरे घर को यह सड़क जाती है। सन्त जब हमें नाम देते हैं तो हम उन पाँच पवित्र नामों के अर्थ समझने की कोशिश करते हैं। यहाँ आए बहुत से पढ़े–लिखे उनका अर्थ सोचते हैं। जब उन्हें बिठाते हैं तो वे बड़ी जल्दी आँखें खोलकर इनका मतलब पूछते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

हे विद्या तू बड़ी अविद्या तें सन्तन की कद्र न जानी।

नाम देते समय उन्हें बताया जाता है कि परमात्मा और हमारे दरमियान पाँच मंजिलें हैं। मुसलमानों ने इन्हें पाँच महल भी कहा है, इसके मालिको को पाँच पटवारी या सरदार कहकर भी बयान किया है। ये उन पाँच मंडलों के धनियों के नाम हैं। आप जब एक मंडल को पार करके दूसरे मंडल में जाएंगे तो आपका इसके साथ संपर्क होगा। आपको पता होगा कि धनी का यह नाम है। जो अक्षरी अर्थ पूछते हैं वे इसमें से क्या ढूंढ़ेगे? अंदर का रास्ता किताब की तरह खुल जाता है कोई शक नहीं रहता अंदर इससे भी साफ दिखाई देता है।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

ऐसे सन्त की खास निशानी यह है कि वह आपको इस घर में वह घर दिखा देता है। गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

काहे रे बन खोजन जाई सर्व निवासी सदा अलेपा तो ही संग समाई।
पोहप मद्य ज्यों बास बसत है मुक्कर में जैसे स्याही।
तैसे ही हर बसे निरंतर घट ही खोजो भाई।
बाहर भीतर ऐको जाने ऐह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई।।

जंगलों–पहाड़ो में जाने से या मंदिरों–मस्जिदों में बैठने से परमात्मा नहीं मिलता। असली मंदिर, ठाकुरद्वारा आपका शरीर है। जिस तरह फूल के अंदर खुशबू है शीशे के अंदर रोशनी है इसी तरह परमात्मा आपके अंदर है। घट तीसरे तिल से थोड़ा सा ऊपर है। पहले अंदर देखेंगे फिर हमें वह परमात्मा हर एक के अंदर नजर आएगा। दोस्त–दुश्मन, पशु–पक्षी के अंदर भी वही बैठा है कौन सी जगह है जो उससे खाली है।

गुरु से ज्ञान ले लेना ही काफी नहीं। गुरु ने रास्ता बता दिया सफर करके मंजिल पर तो हमने ही पहुँचना है। फर्ज करो कोई हमारे ऊपर रहम खाकर हमें रास्ता बता देता है कि आपके गाँव, शहर को यह रास्ता जाता है अगर शक है तो मैं तेरे साथ चल पड़ता हूँ। बेशक वह बताने वाला रहम खाकर हमारे साथ चल पड़ता है लेकिन सफर तो दोनों को ही तय करना है। फर्क इतना ही है कि जो रास्ते को जानता है वह निधड़क चलता जाएगा और दूसरा उसके सहारे चलता जाएगा लेकिन सफर तो दोनों ने उतना ही करना है। आपने यह तजुर्बा खुद करना है।

सन्त सेवक के अंदर शब्द–नाम का दीपक जला देते हैं, उसे बढ़ाना सेवक का काम है। महात्मा दुनिया में आकर एक नमूने का जीवन व्यतीत करते हैं। आप सन्तों की जीवनियाँ पढ़कर देखें हर एक सन्त ने अपनी रोजी–रोटी का धंधा अपनाया।

संसार में पहले सन्त कबीर साहब आए, जो इंसानी जामें से कभी नीचे नहीं गए। वे अपनी रोजी–रोटी का धंधा ताना बुनकर कमाते रहे। राजा–महाराजा आपके सेवक थे। मौहम्मद साहब ने सौदागरी का पेशा अपनाया। सन्त रविदास जी चमड़े की जूतियाँ बनाते थे, चितौड़ की रानी मीरा बाई और राजा पीपा आपके सेवक थे। इतिहास में आता है कि किसी ने मीराबाई को ताना मारा कि गुरु जूतियाँ बनाता है झोंपड़ी में रहता है, और मीरा बाई महलों में रहती है।

सेवक अपनी निन्दा तो सुन लेता है लेकिन गुरु की निन्दा सुननी बहुत मुश्किल हो जाती है। मैं तो यह कहूँगा कि सेवक, गुरु की निन्दा सुन ही नहीं सकता। मीराबाई अपने गुरु रविदास जी को हीरा देना चाहती थी। रविदास जी ने कहा कि बेटी मैंने जो कुछ प्राप्त किया है वह जूतियों में से ही प्राप्त किया है अगर लोग तुझे ताना मारते हैं तो तू घर में बैठकर ही भजन कर लिया कर।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी अपनी खेती–बाड़ी करते रहे, उन्होंने अपनी पेंशन से ही गुजारा किया। महाराज कृपाल ने बहुत नमूने का जीवन व्यतीत किया। आप सादा खाते और सादा पहनते थे। सन्त अपनी जरूरतें कम कर लेते हैं। इसलिए कहते हैं:

गुरु पीर सदाए मंगण जाए ताँके मूल न लग्गी पाए,
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाणे से।

ऐसा नहीं कि गुरु पीर कहलवाकर सेवकों से माँगता रहे। हमें वही महात्मा रास्ता दिखा सकते हैं जो दस नाखूनों से मेहनत करके लंगर में डालते हैं, लोगों पर बोझ नहीं बनते। सेवकों से भी यही कहते हैं कि प्यारेयो! आपका कोई न कोई धंधा होना चाहिए। चाहे दुकानदारी करें, खेती करें या व्यापार करें। जब तक आप अपनी नेक कमाई का अन्न नहीं खाएंगे तब तक आपके अंदर प्रकाश नहीं खुलेगा, सन्तों का हमेशा से यही

उपदेश रहा है। वह सन्त है जिसमें ये सिफत है जो आपके घर में वह घर दिखा दे। ऐसे महात्मा की संगत को ही सतसंग कहा गया है।

सन्त सभा कोट गुर पूरे धुर मस्तक लेख लखाए,
जन नानक कंत रंगीला पाया ते दु:ख न लागे आए।

ऐसे महात्मा की संगत ऊँचे भाग्य से मिलती है। जहाँ आम भीड़–भाड़ है, लोगों को गालियाँ निकाली जाती हैं, बुरा–भला कहा जाता है या बीते वक्त के राजा–महाराजाओं की कहानियाँ सुनाई जाती हैं या हमारी जेब से पैसे निकालने के तरीके सोचे जाते हैं, महात्मा उसे सतसंग नहीं कहते। सतसंग में नाम की महिमा, सतगुरु की महिमा होती है। भाग्य से ऐसा सतसंग मिल जाए तो वह जिंदगी कामयाब है। गौर से शब्द को सुनें:

घर मह् घर देखाय देय सो सतगुर पुरख सुजाण।।
पंच शबद धुनकार धुन तह बाजै शबद नीसाण।।

नामदान के वक्त सतगुरु आपको प्यार से समझाते हैं कि तेरे अंदर एक नहीं पाँच किस्म के शब्द की आवाज आ रही है, हर सन्त ने पाँच शब्द का उपदेश दिया है। सच्चखंड से एक ही शब्द उठ रहा है लेकिन पाँच मंजिलों से गुजरने की वजह से महात्मा उसे पाँच शब्द कहकर बयान करते हैं; मुसलमान उसे पाँच कलमें कह देते हैं।

जब पानी दरिया में से निकलता है उस समय पानी की और आवाज होती है, वही पानी जब पत्थरों से टकराता है उसकी और आवाज हो जाती है। वही पानी जब साफ जमीन पर चलता है उसकी और आवाज हो जाती है। वही पानी जब समुंद्र में जाकर गिरता है तो उसकी और आवाज हो जाती है। पानी एक ही है, उसे जैसी–जैसी जमीन मिलती है उसकी वैसी–वैसी आवाज हो जाती है। इसी तरह सच्चखंड से एक ही शब्द उठता है लेकिन पाँच मंजिलों से गुजरने के कारण उसे पाँच शब्द कहा गया है।

जैसे छड़ी को हवा में मारने से उसकी और आवाज होगी। उसी छड़ी को जमीन पर मारेंगे तो उसकी और आवाज होगी। उसी छड़ी को पानी में मारेंगे तो उसकी और आवाज होगी और उसी छड़ी को कपड़ों पर मारेंगे तो उसकी और आवाज हो जाएगी, शब्द एक ही है।

हम मंदिर, गुरुद्वारों में जाते हैं, आप देखें कि गुरुद्वारों में घंटी बजाते हैं, शंख बजाते हैं वहाँ भी ज्योत जलाई जाती है। हमारे लोकल गुरुद्वारों में जब अखंड पाठ होता है तभी हम अखंड ज्योत जलाते हैं लेकिन आप अमृतसर जाकर देखें वहाँ हमेशा ही ज्योत जलती रहती है। बोद्धों के मंदिर में सबसे पहले घंटा होता है आगे ज्योत जल रही होती है।

किसी भी मंदिर में जाएं वहाँ सबसे पहले घंटा बजाते हैं आगे ज्योत जलती है। मुसलमान, मस्जिद में चिरागा करते हैं, मौलवी ऊँची-ऊँची बाँग देता है और नगाड़ा बजाया जाता है। ईसाईयों के गिरजाघर में सर्विस शुरु होने से पहले बाहर बड़ा घंटा बजाते हैं और मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं। हम सबके रस्मों-रिवाज मिलते-जुलते हैं। महात्माओं ने हमें वैसी ही मिलती-जुलती आवाजें बताई हैं कि आपके अंदर भी इस किस्म की आवाजें हैं। ब्रह्मानंद जी कहते हैं:

अनहद की धुन प्यारी साधो, अनहद की धुन प्यारी रे।

वह धुन बहुत प्यारी है मन को मोह लेती है। बाहर के बाजों में मन मस्त होता है, अंदर के साज पर आत्मा मस्त हो जाती है। बाहर के जितने भी साज हैं उन्हें हम घंटा या दो घंटा बजाएंगे उन्हें बजाने वाले थक जाएंगे या वे ज्यादा मजदूरी माँग लेंगे। आप प्यार से कहते हैं:

कर बिन बाजा पग बिन ताला।

वहाँ बिना हाथ के सहारे के बाजा बजता है, बिना पैर के सहारे के ताल निकलता है; जिसे नामदेव जी कहते हैं:

अन मड़्या मंडल बाजे बिन सावन घन हर गाजे,
बादल बिन बरखा होई जे तत विचारे कोई।

बाहर की ढ़ोलक चमड़े से बनी हुई है। इस संसार में बादल के बिना गर्जना नहीं होती वहाँ बादल के बिना गर्जना होती है। इस संसार में बादल के बिना बारिश नहीं होती लेकिन वहाँ बादल के बिना बारिश हो रही है। हमारे अंदर जन्म-मरण का भय खत्म हो गया है और मन नाम के साथ जुड़कर मान गया है।

दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरान।।

परमात्मा ने इस देह के अंदर बहुत ही हैरान करने वाले मंडल रचे हुए हैं। वारे शाह मुसलमान जाति में फकीर हुए हैं। आप कहते हैं, ''अंदर जाकर देखें इस जिस्म की सैर बहुत अदभुत है दिल को खींचने वाली है। जिसने इस जिस्म के अंदर की सैर कर ली उसकी बाहर की सैर छूट जाती है। उसे फिर बाहर के सारे साज फीके लगने लग जाते हैं चाहे कोई हिन्दु है या मुसलमान है, सतगुरु के बिना राह नहीं मिलती।''

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं, ''प्यारेया, अंदर जाकर देख अक्ल दंग रह जाती है कि किस तरह उस कलाकार ने माँ के पेट में आकर कलाकारी की है।''

तार घोर बाजिंत्र तह साच तखत सुलतान।।

आप कहते हैं कि अंदर सिर्फ खंड ब्रह्मांड या महल ही नहीं, वहाँ वह सुलतान कुल परमात्मा सच्ची शान में अपने तख्त पर विराजमान है।

सुखमन कै घर राग सुन सुंन मंडल लिव लाय।।

आप प्यार से कहते हैं कि ईड़ा, पिंगला और सुखमना हमारी तीन नाड़ियाँ हैं। बेणी साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

ईड़ा पिंगला और सुखमना तीन वसे इक थांईं,
बेड़ी तह पराग मन मज्जन करो ती थांईं।

महात्मा ने अंदर तीन नाड़ियाँ ईड़ा, पिंगला और सुखमना बताई है जो हमारे घर को जा रही हैं। सुखमना नाड़ी बीच में से होकर जाती है इसमें से होकर सुन्नमंडल में लिव लगती है और आगे परमात्मा के घर पहुँच जाते हैं, जिसे गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पूरे गुरु की सच्ची बानी सुखमन अंदर सहज समानी।

सच्ची बानी का कभी नाश नहीं होता। जिस बानी ने दुनिया की रचना पैदा की है वह सुखमना अंदर धुनकारें दे रही है वहाँ किसी कौम या औरत-मर्द का सवाल नहीं है।

अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनह समाय।।

हम दुनिया में जो इच्छाएं रखते हैं वहाँ पहुँचकर शान्ति आ जाती है। वह कथा कहने में नहीं आती। भीखा साहब कहते हैं:

भीखा बात अगम की कहन सुनन में नाहें,
जो जाणे सो कहे ना कहे सो जाणे नाहे।

प्यारेयो, अगर हम गूँगे को मिठाई खिलाकर उससे मिठाई का स्वाद पूछें तो वह ज्यादा से ज्यादा कंधे ही हिला सकता है। इसी तरह सन्त-महात्मा हमें बाहर की थोड़ी बहुत मिसाल देते हैं। महाराज सावन सिंह जी ताजमहल की मिसाल दिया करते थे कि शाहजहाँ ने आगरा में अपनी पत्नी मुमताज की याद में ताजमहल बनवाया था। हम ताजमहल की किसी मकान के साथ क्या मिसाल देंगे। जब मिट्टी की मिसाल मिट्टी से नहीं मिल सकती तो हम परमात्मा की मिसाल किस तरह देंगे।

आप उसे अकथ कथा कहते हैं वह कही नहीं जा सकती। वह अगम है उसकी गमता नहीं, वह अगोचर है इन आँखों से देखा नहीं जा सकता।

उलट कमल अमृत भरया एह मन कतहु न जाय।।

अभी हमारा हृदय कमल उल्टा है फिर यह सीधा हो जाता है। हमारे अंदर जो थोड़ा बहुत अमृत टपक रहा है उसे माया के पदार्थ काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पी रहे हैं। गुरु साहब कहते हैं:

ऊंदे भांडे कछु न समावे, सीधे पवे अमृत धार।

अजपा जाप न वीसरै आद जुगाद समाय।।

यह शब्द आदि–जुगादि से ही परमात्मा की दरगाह से उठ रहा है। यह आवाज जीव को अपनी तरफ बुला रही है। इसे महात्मा ने अजपा जाप कहा है, यह जपा नहीं जा सकता। यह तो खुद ही हमारे अंदर आवाज दे रहा है, धुनकारे दे रहा है।

सभ सखीआं पंचे मिले गुरमुख निज घर वास।।
शबद खोज एहो घर लहै नानक ता का दास।।

अब आप शेख बरम से कहते हैं कि महात्मा चाहे किसी भी युग या किसी भी मुल्क में पैदा हुआ है उसे परमात्मा पाँच शब्दों के जरिए ही मिला है। गुरमुख मालिक के प्यारे इस घर में जाते हैं यह घर प्रलय, महाप्रलय में नहीं गिरता।

प्रलय में ॐ तक सृष्टि ढ़ह जाती है और महाप्रलय में भँवर गुफा तक ढ़ह जाती है। सच्चखंड वह लोखानी देश है जहाँ प्रलय, महाप्रलय नहीं जा सकती; वहाँ वह कुलमालिक है। हर महात्मा का एक ही रास्ता है यहाँ औरत–मर्द का सवाल नहीं। औरत खोज करे, भक्ति करे परमात्मा से मिल सकती है। गरीब–अमीर कोई भी परमात्मा की भक्ति कर सकता है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''जो इन पाँच शब्दों की खोज करके परमात्मा में मिल गया है मैं उनका दास हूँ।''

इस शब्द में गुरु नानकदेव जी ने हमें बहुत प्यार से समझाया कि हमने दस नाखूनों से मेहनत करनी है, अपने आपको साफ करना है। मन को साफ करने का तरीका भजन–सिमरन है। हमारे और परमात्मा के बीच हौमे और अहंकार रूकावट है। हौमे और अहंकार वह है जो हम दिन–रात कहते हैं कि मेरी कौम है, मेरा मजहब है, मेरे बाल–बच्चे हैं।

सन्त–महात्मा कहते हैं कि हम संसार में अकेले आए थे। जब जन्म लिया तो माँस का एक लोथड़ा ही थे, करवट भी नहीं ले सकते थे। हमें जो कुछ मिला यहीं से मिला है लेकिन हम इस पर अपना दावा जताते हैं। जब मौत आती है कोई बताकर नहीं जाता। माँ बेटे को बताकर नहीं जाती, बेटा माँ को बताकर नहीं जाता। पति पत्नी को नहीं बताता और पत्नी पति को बताकर नहीं जाती।

सन्त अपनी जिंदगी में देख लेते हैं कि कौन काबिल है, हमने किसके अंदर बैठना है। मौहम्मद साहब की जीवनी में आता है कि उन्होंने अपने सेवको से पूछा कि सारे धूप में खड़े होकर बताओ कि तुम्हारा क्या–क्या है? सबसे पहले हजरत उमर उठा और उसने बताया, ''मेरे इतने ऊँट हैं। मेरे इतने बच्चे हैं। मेरे पास इतनी धन–दौलत है।'' उसने गिनते–गिनते कई घंटे लगा दिए। मौहम्मद साहब सुनते रहे। जब हजरत अली की बारी आई तो उसने कहा, ''एक खुदा है और एक तू है। खुदा भी तेरी कृपा से ही देखा है तू ही तू है।'' मौहम्मद साहब ने अपनी जगह उपदेश करने के लिए हजरत अली को मुकर्र किया।

आप प्यार से कहते हैं अगर हम सब कुछ उस परमात्मा का कह दें फिर क्या है? लेकिन हमारे अंदर मन बैठा है। हम कहते हैं कि ये सब कुछ तो हमारा ही है, अपना कहकर ही हम दु:खी हैं। हमें गुरु नानकदेव जी ने प्यार से जो समझाया है हमनें इस पर अमल करना है और अपने जीवन को सफल बनाना है। ✻✻✻

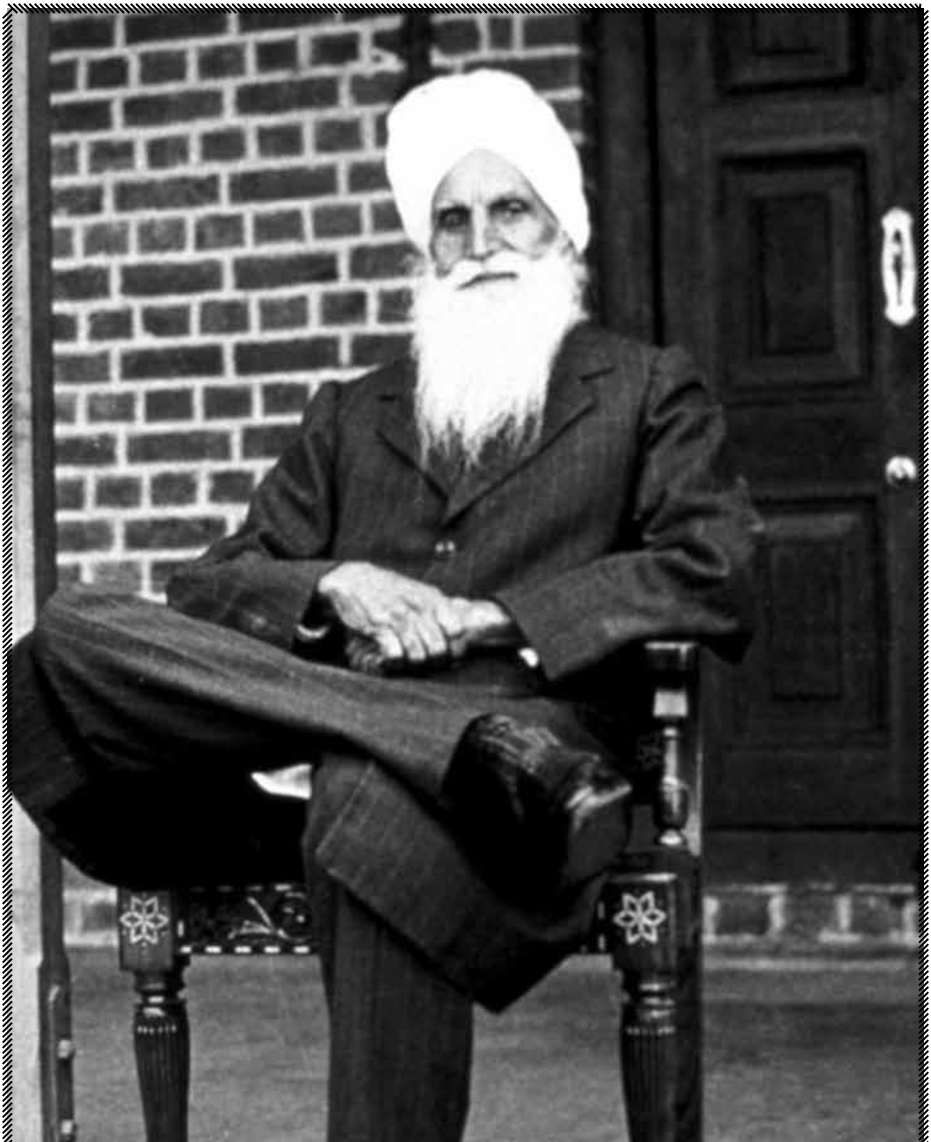

बाबा सावन सिंह जी महाराज

बाबा सावन सिंह जी महाराज

बाबा सावन सिंह जी महाराज बहुत खुले विचारों के थे, आप दूसरों के धर्म की इज्जत करते थे। आप अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के चरणों से मिले असीमित परमार्थ के बारे में उनका धन्यवाद प्रकट करते हुए कहते कि सौभाग्य से मुझे आत्मा के विज्ञान का पाठ पढ़ने और इंसानी जामें में उसका ऊँचा अनुभव करने का मौका मिला है।

आप दरिया दिल थे। आपके शिष्य सभी धर्मों, समाजों और देशों के थे। आप कहा करते थे, ''मेरे गुरु ने दया करके मुझे परमार्थ का जो खजाना दिया है वह किसी धर्म, परिवार या देश की निजी सम्पत्ति नहीं, इसे कोई भी प्राप्त कर सकता है।''

एक बार एक प्रेमी ने आपसे सेवा करने का महत्त्व पूछा? आपने उत्तर दिया, ''अंदर से गुरु की आज्ञा का पालन करना ही असली सेवा है नहीं तो मन हमें बहका देगा।'' अक्सर शिष्य आपसे पूछा करते कि हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं? आप उत्तर देते हुए कहते, ''असली सेवा आत्मा की सेवा है जितनी चाहे कर सकते हैं, उन्हें यह सेवा स्वीकार करने में खुशी होगी।'' पूर्ण गुरु अपने शिष्यों से अपने लिए एक कौड़ी भी स्वीकार नहीं करता, वह अपनी कमाई में से जरूरतमंदो की मदद भी करता है।

कबीर साहब ने सारी जिंदगी ताना बुनकर, गुरु नानकदेव जी ने खेती करके, रविदास जी ने जूते सिलकर, नामदेव जी ने कपड़े रंगकर और बाबा जयमल सिंह जी ने आर्मी में नौकरी करके अपना जीवन निर्वाह किया। अगर शिष्य अपना तन, मन, धन सब कुछ गुरु का समझता है तो वह इसका इस्तेमाल गुरु का प्रशाद समझकर करेगा। ऐसा शिष्य अपने अहंकार को मिटा देता है और परमार्थ की यात्रा का फायदा उठाता है।

वही शिष्य सौभाग्यशाली है जो अपनी कमाई का कुछ हिस्सा गुरु के काम में लगाता है जिससे उसकी कमाई पवित्र हो जाती है। अंदरूनी गुरु शिष्य को कार्य में लगाई गई पूँजी से और ज्यादा देता है। गुरु, शिष्य के दान के पैसो से जरुरतमंदो और गरीबों की सहायता करता है, मिशन को मजबूत बनाता है लेकिन अपने ऊपर एक कौड़ी भी इस्तेमाल नहीं करता।

एक बार आपके एक नामलेवा ने पवित्र कार्य के लिए कुछ पैसे दान करने का फैसला किया। जब वह डेरा ब्यास पहुँचा तो उसके मन ने उसके साथ खेल खेला कि गुरु के पास तो बहुत कुछ है। वह पैसे दिए बिना ही वापिस आ गया। घर वापिस आते हुए रास्ते में उसका पर्स गुम हो गया जिसका उसे बहुत अफसोस हुआ।

आप कभी–कभी अपने जीवन की कहानी सुनाया करते थे कि बाबा जयमल सिंह जी से मिलने के बाद आप अपनी सारी कमाई गुरु के चरणों में रख देते थे। बाबा जयमल सिंह जी जितना ठीक समझते घर के खर्च के लिए भेज देते बाकी पैसा ब्यास आश्रम के निर्माण में लगा देते।

जब आपने बाबा जयमल सिंह जी के पास जाना शुरू किया उस समय वहाँ न कोई घर था न कोई कुआँ था सिर्फ जमीन के नीचे एक गुफा थी। मिलने वाले लोगों को बहुत तकलीफ होती थी। कुछ शिष्य उस जगह पर निर्माण करवाना चाहते थे लेकिन बाबा जयमल सिंह जी इस बात के लिए इजाजत नहीं देते थे। मैंने एक बार बाबा जी से वहाँ निर्माण करवाने की इजाजत माँगी तो बाबा जी ने दया की और वे मान गए। कुछ समय बाद जब काम शुरू किया गया तो नजदीक गाँव के लोगों ने ब्यास नदी की तरफ इशारा करके कहा कि जिस जगह पर डेरा ब्यास स्थित है वहाँ ब्यास नदी अपनी दिशा बदल रही है। ये नदी उनके गाँव का कुछ हिस्सा भी बहाकर ले गई है। आप लोग यहाँ निर्माण करके पैसे क्यों खर्च रहे हैं? मैंने कहा अगर बाबा जी एक बार भी वहाँ बैठकर सतसंग कर दें तो मेरी मेहनत सफल हो जाएगी।

आप बहुत अच्छे अभ्यासी थे, ज्यादा समय घर पर ही रहते थे। आपने लकड़ी की बैरागन बनाई हुई थी। आप बैरागन की मदद से नींद को भगाकर लम्बे समय तक अभ्यास करते थे। आपको आपके गुरु ने आज्ञा दी कि ड्यूटी के वक्त आप अपना समय बेकार की बातों में खराब न करें सिर्फ अपने काम तक ही सीमित रहें। शाम को आफिस से आने के बाद आप दो घंटे अभ्यास में बैठें उसके बाद दो घंटे सतसंग में लगाएं और सुबह जल्दी उठकर अभ्यास करें।

आपका जीवन दर्शाता था कि कुदरत ने आपको महान कार्य के लिए चुना है इसलिए आपको कठिन इम्तिहानों से गुजरना पड़ा। परमात्मा ने आपको आत्माओं को आजाद करने की जिम्मेवारी देनी थी।

आपके गुरु ने आपसे कहा, ''चाहे सारी दुनिया का अधिकार मिल जाए तब भी अहंकार नहीं करना चाहिए। यह दुनिया झूठी है और जो इस दुनिया से प्यार करेगा वह धोखा खाएगा। अगर अधिकार वापिस ले लिया जाए तो निराश नहीं होना चाहिए। जब दुनिया आपकी तारीफ करे तो गुब्बारे की तरह फूलना नहीं चाहिए अगर अपमान हो तो दु:खी नहीं होना चाहिए, इस सबको परमात्मा की इच्छा समझना चाहिए।''

बाबा जी मुझसे बहुत प्रेम करते और मेरा बहुत ध्यान रखते थे। मैं जब डेरा ब्यास जाता तो आप मुझे अपने कमरे में ठहराते थे। एक बार मैं कोहमरी पहाड़ से ब्यास आया। उस समय बहुत गर्मी थी मैंने रास्ते में आराम करने के लिए सोचा। मैं जैसे ही छाया में बैठा मुझे ख्याल आया कि मैं परमात्मा से मिलने जा रहा हूँ और गर्मी के कहर से डरकर आराम करने लगा हूँ। ससी-पन्नू का दुनियावी प्रेम था। ससी रेगिस्तान के गर्म और जलते हुए रेत पर अपने जीवन की परवाह किए बगैर अपने प्रेमी से मिलने गई। मैं रास्ते में समय बेकार कर रहा हूँ परमात्मा से मिलने में देरी कर रहा हूँ क्या मैं गुरु भक्त हूँ? इस पर मुझे एक कवि की लाईनें याद आई:

ससी के नाजुक और कोमल पाँव मेहन्दी से सजे हुए थे,
रेगिस्तान की रेत ऐसे जल रही थी जैसे भट्ठी में जौं भूना जा रहा हो,
ससी के प्यार में सूरज बादलों में छिप गया और उसने धूप देनी बंद कर दी,
ससी की तरफ देखो उसने अपना विश्वास नहीं खोया।

ऐसा सोचकर मैंने एकदम चलना शुरु कर दिया। गाँव वाले जो छाया में आराम कर रहे थे उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं कुछ देर आराम कर लूँ, जब सूरज थोड़ा ढ़ल जाए तो अपनी यात्रा शुरु करूँ। मैं पहले ही आराम करके पछता रहा था। मैंने अपनी यात्रा जारी रखी ताकि मैं जल्दी अपनी मंजिल पर पहुँचू और अपने गुरु के चमकते हुए चेहरे की झलक देखूँ।

बाबा जी अक्सर धूप में बाहर नहीं निकलते थे लेकिन उस समय आप बीबी रूक्को के मना करने पर भी आँगन में टहलते रहे। मेरे डेरा पहुँचने से कुछ मिनट पहले ही आप अंदर गए थे। मुझे धूप से बचाने के लिए बाबा जी ने खुद उस धूप को सहा। गुरु बिना बताए ही अपने बच्चों की पीड़ा अपने ऊपर लेता है।

आप अपने शिष्यों से सदा यही कहते कि अपने काम को पूजा समझें और अपनी जीविका ईमानदारी से कमाएं। एक बार आपको एक बहुत ही सख्त अफसर के नीचे काम करना पड़ा। वह अफसर अपने से नीचे के अधिकारियों को डराया करता था, इस बारे में आपने बाबा जी को पत्र लिखा। बाबा जी ने जवाब दिया कि सख्त अफसर का मिलना अच्छा है, उसके डर से आप ज्यादा ध्यान से काम करेंगे। जिन्हें अपने काम में मुश्किल होती है वे अपने गुरु को याद करें उन्हें राह दिखाई देगी।

आप कहा करते थे कि हम पूर्ण गुरु की महानता को समझने में असमर्थ हैं क्योंकि हम शरीर से बंधे हुए हैं और गुरु को भी एक शरीर से ज्यादा नहीं मानते अगर हमारी यही सोच है तो हमें गुरु से क्या मिलेगा? एक बार की बात है कि बाबा जी हमारे गाँव महिमा सिंह आए हुए थे। आप बिस्तर पर लेटे-लेटे किसी से बात कर रहे थे। मैंने आपसे पूछा कि आप

किससे बात कर रहे थे? बाबा जी ने कहा, ''सावन सिंह, मेरे कुछ शिष्य आगे की लाईनों में लड़ रहे थे उन्हें दुश्मनों ने घेर लिया था मैं उनकी रक्षा के लिए उन्हें प्रेरणा देने गया था।'' इस पर बाबा जी ने कहा कि मैं जब तक शारीरिक रूप में हूँ तुमने यह बात किसी से नहीं करनी।

दु:ख की बात यह है कि हम अपने रिश्तेदारों और बच्चों के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने में बिल्कुल नहीं झिझकते जिन्होंने मौत के समय हमारी मदद नहीं करनी लेकिन हमारे अंदर गुरु के लिए थोड़ा भी प्यार नहीं। गुरु बिना कोई पैसा-पाई लिए मौत के समय हमें लेने आएगा और हमें भवसागर से निकालकर उस पार ले जाएगा।

जिस समय आपने पंजाब में सन्तमत का काम शुरू किया उस समय वहाँ के रहने वाले लोग रीति-रिवाज और मूर्ति पूजा में लगे हुए थे। आपने समझाया कि परमात्मा हर जीव के अंदर है। आपने सन्तमत के कार्य को बहुत साहस और उत्साह के साथ जारी रखा। विरोधी आपकी सभाओं को तितर-बितर कर देते और परमार्थ के प्रेमियों को आपके पास जाने से रोकते। विरोधी आपके विरोध में विज्ञापन बाँटते और आपके मिशन को झूठा बतलाते लेकिन आपका काफिला चलता रहा। आप सबके लिए अच्छा चाहते थे खासकर उनके लिए भी जो आपका विरोध कर रहे थे।

एक बार ब्यास आश्रम के आगे गर्म ख्यालों के लोगों ने शिविर लगाया और सारा दिन आपके खिलाफ प्रचार किया। दोपहर को सतसंग के बाद जब आप उस रास्ते से निकले तो आपने उन विरोधियों से कहा, ''यहाँ आपके पास खाने को कोई प्रबंध नहीं आपको भूख लगी होगी, आप लंगर में से खाना खा लें क्योंकि आप मेरे अपने हैं।''

आपने कभी भी अपने मिशन के बारे में किसी प्रचार की आज्ञा नहीं दी। एक बार आप किसी शहर में सतसंग करने के लिए गए, पहली सभा में लोगों की गिनती बहुत कम थी। इंतजाम करने वालों को चिन्ता हुई उन्होंने आपसे आस-पास के इलाके में प्रचार करने की आज्ञा मांगी लेकिन आप

नहीं माने। थोड़ी देर बाद लाउडस्पीकर पर कुछ विरोधी मुनियादी कर रहे थे कि राधास्वामियों के गुरु इस शहर में आए हैं, वे आँखों से जादू कर देते हैं और सिर पर बाजा रखते हैं कोई भी उस तरफ न जाए।

इस मुनियादी के बाद शहर के लोगों में उत्सुकता जागी और वे देखने के लिए गए कि यह सब क्या है? वहाँ इतनी संगत आई कि पंडाल छोटा पड़ गया। सतसंग सुनने के बाद कई लोगों ने आपसे नामदान के लिए प्रार्थना की। आपने कहा, ''परमात्मा खुद ही बुलाता है खुद ही भेजता है, हमें हमेशा उसमें विश्वास रखना चाहिए।''

इंसानी जामा रचना का ताज है जिसे परमात्मा ने खुद बनाया है। इंसानी जामा धरती, अग्नि, वायु, जल और आकाश इन पाँच तत्वों से बना हुआ है। दु:ख की बात यह है कि इंसान पेड़ों-पौधों, जानवरों आदि की पूजा में फँसा हुआ है जिनमें एक या दो तत्व हैं। देवी-देवताओं की पूजा करना इस तरह है जैसे हम किसी अमीर आदमी के नौकरों की पूजा कर रहे हैं, केवल परमात्मा ही पूजा के काबिल है। पूर्ण गुरु के संपर्क के बिना हम परमात्मा तक नहीं पहुँच सकते।

जो हमेशा अपना मुँह अपने गुरु की तरफ रखते हैं वे हर रात उसकी याद में बिताते हैं अपने आपको उसके असीमित प्रेम में भिगो देते हैं और उसे अपने आपमें प्रकट कर लेते हैं। ऐसे प्रेमी कभी भी किसी के बारे में बुरा नहीं कहते वे उन लोगों के लिए भी बुरा नहीं कहते जो उनका विरोध करते हैं और उन्हें कष्ट देते हैं।

एक बार एक शिष्य ने आपसे कहा कि उसका मन उसे परेशान कर रहा है अभ्यास में बैठने नहीं दे रहा। आपने कहा कि सिमरन के समय मन के ऊपर कड़ी नजर रखनी चाहिए इसे शोर नहीं मचाने देना चाहिए। अगर मन बार-बार ऐसा करता है तो इसे वापिस लेकर आएं और मन को कड़े शब्दों में समझाएं कि मैंने इतने समय तक अभ्यास करना है वह कोई विचार न उठाएं। इस तरह मन को शान्त रहने की आदत हो जाएगी।

कई बार ऐसा होता है कि मन के अंदर शान्ति नहीं होती कोई चिन्ता सता रही होती है। चिन्ताओं की दवाई है कि हमें मन को समझाना चाहिए कि हमारा भाग्य हमारे जन्म से पहले ही लिखा जा चुका है। जो शरीर हमारे साथ आया है इसे भी बदला नहीं जा सकता। अगर अभ्यास के दौरान मन दौड़ता रहेगा तो अभ्यास में बैठने से हमारा कोई फायदा नहीं होगा।

आप पवित्र नाम को दोहराने की आदत बनाएं। चलते–फिरते, उठते–बैठते, खाते–पीते हर समय सिमरन करें ऐसा करने से आपको ताजगी महसूस होगी। आपको परिवार, दोस्तों और दुनिया के तानों के बावजूद भी सिमरन नहीं छोड़ना चाहिए। सिमरन अंदरूनी मंडलों में प्रवेश करने का सबसे बड़ा शस्त्र है। अगर कोई आपके साथ है और आप चाहते हैं कि इसे नाम मिले तो उसे नाम लेने के लिए मजबूर न करें, ऐसा करने से आपको उसके कर्मों का भार उठाना पड़ेगा।

कुछ प्रेमियों ने आपसे प्रार्थना की कि उन्हें बिना अभ्यास के मुक्त किया जाए। आप कड़क कर बोले, ''यह मुमकिन नहीं, आपका काम करना आपकी ड्यूटी है। इसे इस जन्म में करें चाहे अगले जन्म में करें, जहाँ पर छोड़ा था वहीं से शुरु करना पड़ेगा।''

आप जब कभी अच्छे मूड में होते तो कहते कि इसमें कोई शक नहीं कि अभ्यास करना बहुत मुशिकल है अगर शिष्य दुनिया से प्रेम कम करके अपने अंदर गुरु के लिए गहरा प्रेम पैदा कर ले तो उसे बहुत फायदा होगा, वह जन्म–मरण के चक्कर से बच जाएगा। हम जिसे याद करते हैं उसका रूप हो जाते हैं। गुरु एक रेल के इंजन की तरह है, गुरु को प्रकट किए बिना मन और शरीर की गाड़ी नहीं चलाई जा सकती। गुरु के स्वरूप की कल्पना करने से आँखें और दिव्य संगीत सुनने से कान पवित्र हो जाते हैं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

1 अक्टूबर 1987

हम किसकी भक्ति कर रहे हैं?

16 पी. एस.आश्रम (राजस्थान)

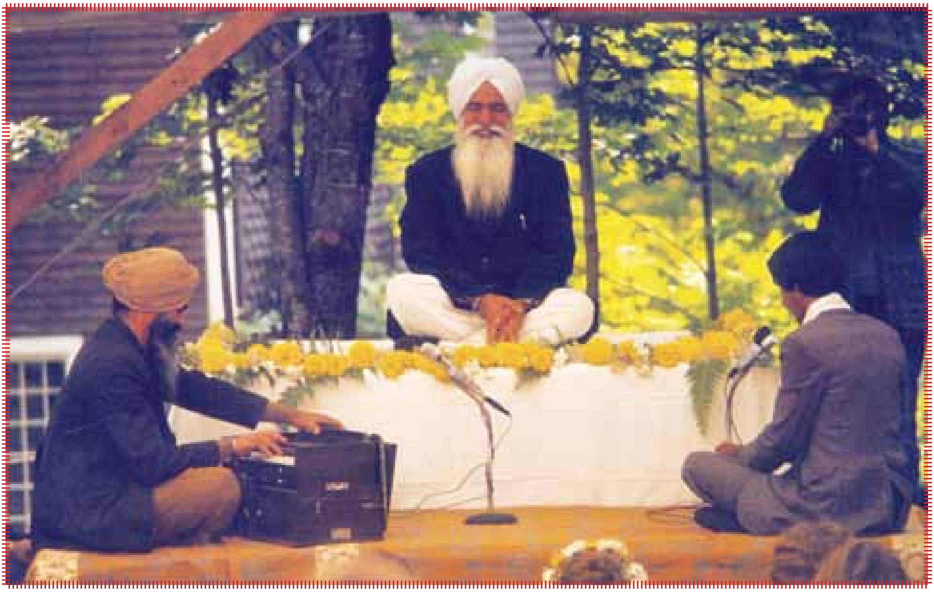

जब हमारे मुंह से यह आवाज निकलती है तो हमारे हृदय से भी यही बात निकलनी चाहिए कि गुरु हर जगह है। गुरु पानी के नीचे भी है, इस धरती पर भी है और आकाश में भी है। गुरु पहले भी था, अब भी है और आगे भी रहेगा। जब हमें यह एहसास होता है कि हमें सिर्फ गुरु का ही आसरा है, हम उसकी दया से जागते हैं और उसकी दया से ही सोते हैं। इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह उसकी दया से ही हो रहा है, उसकी दया के बिना दुनिया में कुछ भी नहीं है।

जब गुरु नाम देता है वह शब्द रूप होकर हमारे अंदर बैठ जाता है। जब तक हमारे अंदर गुरु के लिए सच्चा प्यार पैदा नहीं होता तब तक वह

हमें दिखाई नहीं देता। जैसे जब तक बच्चा खेल में मस्त है माँ उसकी तरफ ध्यान नहीं देती लेकिन जब बच्चा रोकर माँ को पुकारता है तो माँ भागकर आती है और उसकी जरूरत को पूरा करती है। उसी तरह जब हम दुनिया का आसरा छोड़कर गुरु की भक्ति करते हैं जो हमारे अंदर बैठा है तो वह हमारी हर जरूरत को पूरा करता है।

शिष्य भजनों द्वारा ही गुरु का आभार प्रकट कर सकता है। मैंने इन भजनों में अपने प्यारे कृपाल के प्रति अपना आभार प्रकट करने की कोशिश की है क्योंकि जो दिल में होता है वही जुबान पर आता है। मैंने अपने भजनों द्वारा यह समझाने की कोशिश की है कि महाराज कृपाल क्या थे और आप हमें क्या देना चाहते थे?

मैंने यह बताने की कोशिश की है कि जब शिष्य के अंदर गुरु प्रकट हो जाता है तो शिष्य में नम्रता आ जाती है। ऐसे शिष्य के लिए गुरु सदा सहायक हो जाता है। गुरु बहुत दयावान होता है। जब शिष्य को पता चलता है कि गुरु उसके अंदर प्रकट हो गया है तो शिष्य भी बहुत नम्र और दयावान हो जाता है क्योंकि वह अपने अंदर गुरु की वास्तविक महिमा देखता है।

स्वामी जी महाराज ने एक जगह कहा है, ''हमें गुरु के दरवाजे पर एक भिखारी की तरह अलख जगानी चाहिए और गुरु के आगे प्रार्थना करनी चाहिए। जिस तरह भिखारी घर-घर जाकर भीख माँगता है, वह लोगों से यह नहीं पूछता कि आप मुझे कुछ देंगे या नहीं? अब यह घर के मालिक के ऊपर है कि वह उसे भीख देता है या नहीं? भिखारी का काम दरवाजे पर बैठकर भीख माँगना है। भिखारी जानता है कि जब घर के मालिक की मर्जी होगी वह उसे कुछ देगा। किसी जगह उसे भीख मिलती है और किसी जगह भीख नहीं भी मिलती।''

उसी तरह जब हम गुरु के दरवाजे पर जाते हैं तो हमें अपने मन को भिखारी की तरह बनाना चाहिए। हमें गुरु के आगे कोई शर्त नहीं रखनी चाहिए कि मैं आपका भजन करूंगा और आपकी हर बात मानूंगा लेकिन पहले आप मेरी बीमारी और बेरोजगारी दूर करें। हम गुरु के दरवाजे पर बैठकर प्रेमपूर्वक वह काम करें जो उसने हमें करने के लिए कहा है। यह गुरु के ऊपर है वह कब हमारे ऊपर दया करता है। हम गुरु से सवाल नहीं कर सकते कि जल्दी करें या यह काम अभी करें। गुरु एक शक्ति है हमारी भक्ति के अनुसार गुरु जानता है कि हमें क्या देना चाहिए।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''प्यारेयो! अफसोस है कि आप लोगों ने अपना मन भिखारी की तरह नहीं बनाया इसीलिए आप गुरु से ज्यादा फायदा नहीं उठा पाते।''

आमतौर पर जब हम गुरु के पास जाते हैं तो हम चाहते हैं कि हमारी इच्छाएं पूरी हों। हमारी सेहत अच्छी हो और हम अच्छा धन-दौलत पाने की इच्छा रखते हैं लेकिन हमें यह अहसास नहीं होता कि हमारे अंदर ये इच्छाएं कौन पैदा करता है? ये इच्छाएं हमारे अंदर हमारा मन पैदा करता है और हम इसे गुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। हम अपने गुरु परमात्मा को खुश करने के लिए भक्ति कर रहे हैं या मन को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे हैं?

हम भूल जाते हैं कि जो शब्द गुरु हमारे अंदर बैठा है वह सब कुछ जानता है। वह हमें वह देता है जो हमारे लिए ठीक होता है लेकिन हम शब्द गुरु में विश्वास रखने की बजाय अपने मन का हुक्म मानते हैं। सन्त-सतगुरु ने अपने अंदर शब्द-गुरु को प्रकट किया होता है, उनकी जिंदगी में जो कुछ भी होता है वे उसे खुशी-खुशी गुरु की मौज समझते हैं। वे अपने मन में कोई इच्छा नहीं रखते और न ही अपने गुरु से कोई इच्छा पूरी करवाना चाहते हैं। ***